21

बारहों का मिशन

(10:1-23)

पिछले अध्याय का अन्त अध्याय 10 के परिचय का काम करता है: ''इसलिए खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिए मजदूर भेज दे'' (9:38)। यीशु बारहों को सीमित आज्ञा देकर यहूदी लोगों में भेज रहा था। उन्होंने राज्य के निकट आने का प्रचार करते हुए बीमारों को चंगाई देकर और दुष्टात्माओं को निकालकर अपने संदेश को मान्य बनाना था। अध्याय 10 में यीशु की आज्ञा में मत्ती के विवरण में यह दूसरा बड़ा उपदेश है।

मुख्य रूप में इस अध्याय में यीशु के निर्देश बारहों के इस्राएल में जाने की सीमित आज्ञा तक सीमित थे (10:5-15, 23)। परन्तु उसके कुछ निर्देश अधिक सामान्य थे (10:18, 22, 26, 28, 32)। ये निर्देश बड़ी आज्ञा अर्थात ग्रेट कमीशन के आगे की ओर संकेत करते थे, जिसमें यह आदेश दिया गया कि मसीह का सुसमाचार सब जातियों को बताया जाए (28:18-20; मरकुस 16:15, 16; लूका 24:46, 47)। परन्तु इस अर्थ में अध्याय 10 बारहों के मिशन के साथ-साथ कुछ हद तक कलीसिया के मिशन की भी बात करता है।[1]

ऐसा लगता है कि मत्ती की दिलचस्पी सीमित आज्ञा के बजाय यीशु के निर्देशों में अधिक थी। चेलों के जाने, काम करने और वापस आने के सम्बन्ध में वास्तविक रूप में कुछ नहीं बताया गया (देखें मरकुस 6:12, 13, 30; लूका 9:6, 10)। बातचीत के बाद, मत्ती ने कहा, *यीशु* ''उनके नगरों में उपदेश और प्रचार करने को वहां से चला गया'' (11:1)।[2]

बारहों को बुलाना (10:1-4)

[1]फिर उसने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें।

[2]इन बारह प्रेरितों के नाम ये हैं: पहिला शमौन, जो पतरस कहलाता है, और उसका भाई अन्द्रियास; जबदी का पुत्र याकूब, और उसका भाई यूहन्ना; [3]फिलिप्पुस, और बरतुल्मै, थोमा और महसूल लेने वाला मत्ती, हलफई का पुत्र याकूब और तद्दै, [4]शमौन कनानी, और यहूदा इस्करियोती, जिसने उसे पकड़वा भी दिया।

आयत 1. यीशु जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में चेलों की बड़ी संख्या इकट्ठी कर रहा था। उनके साथ समय बिताने से उसे उनके आचरण और व्यवहार को जांचने का अवसर मिल गया। इस बड़े समूह में से (देखें लूका 10:1), उसने अपने निकटतम **चेलों** का एक छोटा सा झुण्ड चुना। ''चेला'' (*mathētēs*) शब्द का अर्थ है ''सीखने वाला'' या ''अनुयायी।'' बारह के

चयन और नियुक्ति का वर्णन मरकुस 3:13-15 और लूका 6:12, 13 में मिलता है।

इन लोगों को उनकी व्यक्तिगत क्षमताओं, गुणों, या वफ़ादारी के आधार पर नहीं, बल्कि प्रभु की परम इच्छा और उद्देश्य के अनुसार चुना गया था। उन्हें प्रार्थना की रात के बाद चुना गया था (लूका 6:12)। वह ऐसा अन्य अवसरों पर भी करता होगा पर पवित्र शास्त्र में केवल यहीं पर बताया गया है कि यीशु ने सारी रात प्रार्थना की। उस रात प्रार्थना के लिए उसका समर्पण निश्चित रूप से यह दिखाता है कि इस निर्णय को उसने कितना आवश्यक माना। इन लोगों में साफ कमियां थीं: उनमें आत्मिक समझ, विनम्रता, विश्वास, समर्पण और शक्ति की कमी थी। परन्तु तीन से अधिक वर्षों तक यीशु के साथ रहने से उनके जीवन बदल गए।

क्या मत्ती का यह वचन ही बारहों के चयन और नियुक्ति के विषय में है? यूनानी शब्द (*proskaleō*) जिसका अनुवाद **बुलाकर** हुआ है, उसका अर्थ "किसी विशेष कार्य या पद के लिए बुलाहट" (देखें प्रेरितों 13:2; 16:10) या "अपने पास बुलाना" भी हो सकता है।[3] नये नियम में बाद वाला अर्थ अधिक पाया जाता है और यहां इसका यही अर्थ चाहा गया हो सकता है। अन्य शब्दों में यीशु अपने उन चेलों को जिन्हें उसने पहले से चुन लिया था, एक सीमित आज्ञा देकर भेजने के लिए अपने पास बुला रहा था।[4]

इस तथ्य का कि यीशु के **बारह** चुने हुए चेले थे, बड़ा महत्व है। माइकल जे. विलकिन्स ने कहा कि "बारह परमेश्वर के कार्यक्रम में उद्धार के इतिहास की निरन्तरता का प्रतीक हैं।"[5] पुराने नियम में बारह पुरखाओं (उत्पत्ति 35:22; 42:13, 32) से इस्राएल के बारह गोत्र बने (निर्गमन 24:4; 28:21)। बारह प्रेरितों और बारह गोत्रों के बीच सम्बन्ध यीशु की इस बात से मिलता है कि बारह चेलों ने "बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय" करना था (19:28)। इससे भी बढ़कर, स्वर्गीय नगर के दर्शन में, उनके नाम नये यरूशलेम की नीवों पर लिखे हुए थे (प्रकाशितवाक्य 21:14)। यीशु के चेलों से नया यरूशलेम (या कलीसिया) अर्थात परमेश्वर के असली लोग बनना था (रोमियों 2:28, 29; 9:6-8; गलातियों 3:29; 6:16; फिलिप्पियों 3:3; याकूब 1:1; 1 पतरस 1:1)। वास्तव में कलीसिया "प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नेंव पर जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है" बनी (इफिसियों 2:20)।

इस समय से पहले, यीशु वास्तव में अकेले सेवा करता था। भीड़ के साथ वे बारह भी भागीदारों के रूप में नहीं, बल्कि केवल देखने वालों के रूप में उसके पीछे चलते थे। यहां पर यीशु ने **उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार** [या सामर्थ[6]] **दिया कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें**। यहां की भाषा यीशु की सेवकाई के पहले विवरणों का स्मरण दिलाती है (4:23; 9:35)।

परन्तु यह काम सीमित था, इस कारण चेलों को मिली सामर्थ समय की केवल छोटी अवधि के लिए रही होगी। बाद में यीशु ने, स्वर्ग में अपनी वापसी से थोड़ा पहले उन्हें वचन दिया कि "जब पवित्र आत्मा [उन पर] आएगा तब [वे] सामर्थ" पाएंगे (प्रेरितों 1:8)। इस प्रतिज्ञा में दो दान थे: पहला पवित्र आत्मा का और दूसरा उस सामर्थ का जो उन्हें देनी थी। यीशु की प्रतिज्ञा उसके ऊपर उठाए जाने के बाद आने वाले पिन्तेकुस्त के दिन पूरी हो गई (प्रेरितों 2:1-4)। इस सामर्थ की एक बात उस सामर्थ से जो उन्हें पहले दी गई थी अलग थी। इस बार उन्हें दूसरों को

आत्मा के आश्चर्यकर्म करने के दान देने की योग्यता मिलनी थी (प्रेरितों 8:14-19)।

आयतें 2-4. मत्ती ने यीशु द्वारा उन्हें भेजे जाने से पहले **बारह प्रेरितों के नाम** दिए। लूका के अनुसार, पहले जब यीशु ने इन चेलों को चुना था, तो उसने ''[उन्हें] प्रेरित कहा'' था (लूका 6:13)। ''प्रेरित'' के लिए यूनानी शब्द (*apostolos*) जिसका अंग्रेज़ी लिप्यंतरण ''apostle'' हुआ है, मत्ती में केवल एक बार, मरकुस में एक या दो बार (मरकुस [3:14][7]; 6:30), और यूहन्ना में एक बार (यूहन्ना 13:16) मिलता है। नये नियम में अधिकतर यह शब्द लूका और पौलुस के लेखों में पाया जाता है। ''प्रेरित'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''apostle'' क्रिया शब्द *apostellō* से सम्बन्धित, जिसका अर्थ है ''चुनकर भेजा गया।'' यह उस व्यक्ति की ओर संकेत करता है जिसे उसके भेजने वाले की ओर से चुना गया, आज्ञा दी गई और उसकी ओर से काम करने का अधिकार देकर भेजा गया है। बारह ''यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया, और पृथ्वी की छोर तक'' (प्रेरितों 1:8) यीशु की गवाही देने के लिए उसके निजी दूत बन गए। मरकुस ने कहा कि उन्हें ''उसके साथ-साथ'' रहने के लिए चुना गया था ताकि ''वह उन्हें भेजे कि वे प्रचार करें'' (मरकुस 3:14)।

यीशु के प्रेरित बनने के लिए, कुछ योग्यताएं होनी आवश्यक थीं। उदाहरण के लिए, यहूदा के उत्तराधिकारी का पात्र बनने के लिए चुने जाने वालों के लिए, ''जितने दिन तक प्रभु यीशु [उनके] साथ आता-जाता रहा अर्थात यूहन्ना के बपतिस्मा से लेकर उसके ऊपर उठाए जाने तक'' वह प्रेरितों के साथ रहा। उसकी जगह पर नियुक्ति से अन्य प्रेरितों के साथ ''उसके जी उठने का गवाह'' बन जाना था (प्रेरितों 1:21, 22)। अन्य वचनों से संकेत मिलता है कि प्रेरितों के लिए उसे अपने जी उठने के बाद देखा जाना आवश्यक था (1 कुरिन्थियों 9:1) और यह कि उन्हें प्रभु द्वारा चुना जाता था (इफिसियों 4:11)।[8]

नये नियम में प्रेरितों की तीन और सूचियां दी गई हैं (मरकुस 3:16-19; लूका 6:14-16; प्रेरितों 1:13)। चारों सूचियों की तुलना किए जाने पर, नामों के स्पष्ट अन्तर मिलते हैं। ये अन्तर इस समझ के साथ आसानी से समझाए जा सकते हैं कि लोगों के आम तौर पर एक से अधिक नाम होते थे। सूचियों के क्रम में भी थोड़ी सी भिन्नता है।

सभी सूचियों में, **शमौन** जिसका नाम यीशु ने **पतरस** रखा था, **पहले** मिलता है। वह प्रेरितों में अगुवे के रूप में निकलता है, जैसा कि सुसमाचार की पुस्तकों और प्रेरितों के काम के आरम्भिक अध्यायों से स्पष्ट है। मत्ती की सूची में, पतरस के बाद **उसका भाई अन्द्रियास** आता है। मछलियां पकड़ने वाले जालों से इन लोगों को बुलाने की बात सुसमाचार के इस विवरण में पहले मिलती है (4:18-20 पर टिप्पणियों)। फिर अपने **भाई यूहन्ना** के साथ **जबदी का पुत्र याकूब** आता है। यीशु ने इन्हें ''गर्जन के पुत्र'' नाम दिया था (मरकुस 3:17)। उनकी बुलाहट भी मत्ती में पहले मिलती है (4:21, 22 पर टिप्पणियां देखें)। स्पष्टतया पतरस, याकूब और यूहन्ना मसीह के सबसे करीबी चेले थे। इन तीनों को ''बहुत नज़दीकी'' नाम दिया जाता है, क्योंकि याईर की बेटी को जिलाने (मरकुस 5:37), रूपांतर (17:1), और गतसमनी के भाग में (26:37) यीशु के साथ होने का सौभाग्य केवल इन्हीं को मिला है।

फिलिप्पुस का नाम यूहन्ना रचित सुसमाचार में कई बार आता है (यूहन्ना 1:44-46; 6:5-7; 12:20-22; 14:8)। पतरस और अन्द्रियास की तरह वह भी मूलतया बैतसैदा का रहने

वाला था (यूहन्ना 1:44)। उसे भी यीशु के पास नतनएल ही लेकर आया था (यूहन्ना 1:45, 46)। आगे **बरतुल्मै** का नाम आता है, जिस कारण कइयों का मानना है कि यह वह नतनएल ही है (यूहन्ना 1:45; 21:2)। ''बरतुल्मै'' नाम से उसे ''तुल्मै'' या ''तालमी'' नामक किसी व्यक्ति के पुत्र के रूप में पहचान मिली हो सकती है।[9] **थोमा** को ''दिद्मुस'' भी कहा जाता था (यूहन्ना 11:16; 20:24; 21:2); ''थोमा'' अरामी नाम से लिया गया है जबकि ''दिद्मुस'' इसके यूनानी समानान्तर से; इन दोनों नामों का अर्थ ''जुड़वां'' है। इन नामों से कइयों ने यह अनुमान लगाया है कि उसका कोई जुड़वां था। **महसूल लेने वाले मत्ती** जिसे ''लेवी'' कहा जाता है (मरकुस 2:14) को यीशु द्वारा चेला बनने के लिए महसूल की उसकी चौंकी से बुलाया गया था (9:9 पर टिप्पणियां देखें)।

याकूब को ''हलफई का पुत्र'' कहा जाता था, शायद उसे अपने परिश्रमी हम नाम जबदी के पुत्र और यूहन्ना के भाई याकूब से अलग करने के लिए है। यह वही आदमी हो सकता है जिसे ''छोटा याकूब'' (मरकुस 15:40) या ''छोटा वाला याकूब'' (NIV) कहा जाता था। **तद्दै** को प्रेरितों की अन्य सूचियों वाला ''याकूब का बेटा यहूदा'' भी माना जाता है (लूका 6:16; प्रेरितों 1:13)। ''तद्दै'' का इस्तेमाल मत्ती और मरकुस द्वारा शायद इसलिए किया गया ताकि उसे कहीं यहूदा इस्करियोती न समझ लिया जाए; एक बार, यूहन्ना ने उसे ''यहूदा (इस्करियोती नहीं)'' (यूहन्ना 14:22) कहा। ''तद्दै'' (10:3; मरकुस 3:18) के बजाय कुछ प्राचीन हस्तलिपियों में ''लेबेयुस'' मिलता है। इस वचन में **शमौन कनानी** जो अधिक बुनियादी है, NRSB में ''शमौन जेलोतेसी'' कहा गया है-अनुवादक। जैक पी. लुईस ने लिखा है, ''कनानी 'जोशीले होने' के अर्थ वाले इब्रानी शब्द *kana* से लिया गया है।''[10] लूका ने यूनानी शब्द (*zēlōtēs*) का इस्तेमाल करते हुए उसके विवरण के लिए इसे ''जेलोतेस'' अनुवाद किया है (लूका 6:15; प्रेरितों 1:13)।

यहूदा इस्करियोती का नाम प्रेरितों 1:13 को छोड़, जहां उसका नाम शामिल नहीं किया गया, हर सूची के अन्त में आता है। यीशु को उसके द्वारा पकड़वाए जाने की बात का उल्लेख तब मिलता है, जब प्रेरितों 1:25, 26 में लिखित उसके उत्तराधिकारी मत्तियाह के चयन का उल्लेख आता है। ''इस्करियोती'' शब्द का अर्थ यहूदिया में स्थित एक नगर ''करियोथ का आदमी'' हो सकता है (यहोशू 15:25)[11]। यदि ऐसा है तो यहूदा अकेला प्रेरित था, जो गलील से नहीं था। इस शब्द की अन्य व्याख्याओं में ''हत्यारा,'' ''विश्वासघाती,'' ''लाल,'' ''लाल सिर,'' ''लाल रंग देने वाला'' और ''चमड़े का थैला रखने वाला''[12] शामिल हैं। कई प्राचीन हस्तलिपियों में ''शमौन इस्करियोती'' को उसका पिता बताया गया (यूहन्ना 6:71)। यहूदा चोर था (यूहन्ना 12:6), **जिसने** प्रभु को **पकड़वा दिया**। यीशु ने एक अवसर पर उसके लिए कहा था, ''क्या मैंने तुम बारहों को नहीं चुना? तौभी तुम में से एक व्यक्ति शैतान है'' (यूहन्ना 6:70, 71)।

यीशु ने इन बारह पुरुषों को उनकी अलग-अलग पृष्ठभूमि से आने के बावजूद चुना। बेशक उनमें बहुत कुछ साझा था पर उनके मिजाज़ और स्वभाव अलग-अलग थे। पतरस जल्दबाज आशावादी था, जो आमतौर पर बिना सोचे ही बोल देता था (14:28; 26:33, 35)। थोमा निराशावादी था (कुछ लोग यथार्थवादी कहेंगे), जो उसे बताई गई बातों को मानने से पहले

उनका प्रमाण चाहता था (यूहन्ना 11:16; 20:24, 25)। शमौन जेलोतेसी सम्भवतया रोमियों और उनके कठपुतली राजाओं अर्थात हेरोदेसों का कट्टर शत्रु था और महसूल लेने वालों से घृणा करता था। विडम्बना ही है कि बाद में वह महसूल लेने वाले मत्ती के साथ एक साथी प्रेरित बन गया। यीशु की महानता इस बात में देखी जाती है कि वह अलग-अलग लोगों के समूह को लेकर सुसमाचार ले जाने वाले एकीकृतबल में ढाल लेता है। मिलकर उन्होंने ''जगत को उलटा-पुलटा कर दिया'' (देखें प्रेरितों 17:6; KJV)।

बारहों को आज्ञा देकर भेजना (10:5-15)

[5]इन बारहों को यीशु ने यह आज्ञा देकर भेजा ''अन्यजातियों की ओर न जाना, और सामरियों के किसी नगर में प्रवेश न करना। [6]परन्तु इस्राएल के घराने ही की खोई भेड़ों के पास जाना। [7]और चलते-चलते यह प्रचार करो: 'स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।' [8]बीमारों को चंगा करो, मरे हुओं को जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्टात्माओं को निकालो। तुमने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो। [9]अपने पटुकों में न तो सोना, और न रूपा, और न तांबा रखना; [10]मार्ग के लिए न झोली रखो, न दो कुरते, न जूते और न लाठी लो क्योंकि मजदूर को उसका भोजन मिलना चाहिए। [11]जिस किसी नगर या गांव में जाओ, तो पता लगाओ कि वहां कौन योग्य है। और जब तक वहां से न निकलो, उसी के यहां रहो। [12]घर में प्रवेश करते हुए उसको आशीष देना। [13]यदि उस घर के लोग योग्य होंगे तो तुम्हारा कल्याण उन पर पहुंचेगा, परन्तु यदि वे योग्य न हों तो तुम्हारे पास कल्याण लौट आएगा। [14]जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे और तुम्हारी बातें न सुने, उस घर या उस नगर से निकलते हुए अपने पांवों की धूल झाड़ डालो। [15]मैं तुम से सच कहता हूं न्याय के दिन उस नगर की दशा से सदोम और अमोरा के देश की दशा अधिक सहने योग्य होगी।''

यह बताने कि यीशु ने अपने प्रेरितों को बुलाया (10:1) और उनके नामों की सूची देने के बाद (10:2-4), मत्ती ने उसके लिमिटेड कमीशन के लिए यीशु के विशेष निर्देश भी शामिल किए (10:5-15)।

आयतें 5, 6. प्रेरितों के जाने, प्रचार कार्य या वापसी का कोई स्पष्ट विवरण नहीं दिया गया। मत्ती ने केवल इतना लिखा कि **इन बारहों को यीशु ने यह आज्ञा देकर भेजा**। यूनानी शब्द (*apostellō*) जिसका अनुवाद ''भेजा हुआ'' होता है, संज्ञा शब्द ''apostle'' से सम्बन्धित हैं। मरकुस 6:7 संकेत देता है कि प्रेरितों को ''दो-दो करके'' भेजा गया था। क्रिया शब्द (*parangellō*) जिसका अनुवाद ''आज्ञा देकर'' हुआ है, नये नियम में तीस से अधिक बार मिलता है और इसका अनुवाद अलग-अलग हुआ है। इसका इस्तेमाल सैनिक शब्द, कानूनी शब्द, नैतिक शब्द, डॉक्टरी शब्द के रूप में और स्वीकृत मानकों या तकनीकों के लिए हुआ है। इसमें आवश्यक कर्त्तव्य का विचार पाया जाता है। आज्ञा दिए जाने वाले व्यक्ति को आज्ञा कार होने की चुनौती दी जाती थी।

यीशु ने बारहों को आज्ञा दी, ''**इन बारहों को यीशु ने यह आज्ञा देकर भेजा अन्यजातियों की ओर न जाना, और सामरियों के किसी नगर में प्रवेश न करना। परन्तु इस्राएल के**

घराने ही की खोई भेड़ों के पास जाना।'' सुसमाचार के अन्य विवरणों में यह पाबन्दी और कहीं नहीं दोहराई गई। यहां तक कि सत्तर लोगों के लिए भी यह आवश्यक नहीं है। यीशु अपने प्रेरितों को ''जिस-जिस नगर और जगह को वह आप जाने पर था, वहां'' भेज रहा था (लूका 10:1)। प्रेरितों पर उसकी यह पाबन्दी अपने मिशन को समझाने के उसके ढंग से मेल खाती थी। उसने कहा ''इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा गया'' (15:24)। यह रूपक परमेश्वर के लोगों को पहाड़ों पर बिखरी हुई भेड़ों के रूप में दिखाता है (देखें यशायाह 53:6; यिर्मयाह 50:6; यहेजकेल 34:11-16; 1 पतरस 2:25)। रॉबर्ट एच. माउंस ने ''इस इकट्ठा होने'' को ''मसीहा के युग की भोर'' के रूप में देखा।[13]

यीशु के दिशा-निर्देशों ने बारहों पर केवल यहूदी आबादी तक जाने की पाबन्दी लगा दी। विलियम बार्कले ने लिखा है, ''वे उत्तर की ओर सीरिया में नहीं जा सकते थे, न पूर्व की ओर दिकापुलिस में जा सकते थे, जो मुख्यतया अन्यजाति क्षेत्र था।''[14] उन्हें दक्षिण की ओर और ''सामरियों के किसी नगर में प्रवेश'' करने की मनाही भी की गई थी। ''इस आदेश का असर ... बारहों की आरम्भिक यात्राओं को गलील तक सीमित करना है।''[15] 10:23 में यीशु ने कहा कि वे ''इस्राएल के सब नगरों में'' जाएंगे, जिसमें गलील से अधिक नगर शामिल होने थे।

प्रेरितों पर ये पाबन्दियां क्यों लगाई गईं? इसके कई उत्तर दिए जा सकते हैं। (1) पूर्व धारणा जो यहूदियों और अन्यजातियों के बीच में और यहूदियों और सामरियों के बीच में थी[16] बहुत बड़ी थी। बेशक यह याद रखना आवश्यक है कि यीशु का मिशन सब लोगों के लिए उद्धार लाना था। अन्त में उसने अपने चेलों को ''सब जातियों'' में और ''सारे जगत के लोगों'' के पास भेजा (28:19; मरकुस 16:15)। (2) यहूदी लोग आने वाले राजा के लिए अधिक तैयार थे। यह अधिक अच्छा था कि ''मज़दूरों को कटाई के केवल उसी खेत में भेजा जाए जो हंसुए के लिए तैयार था।''[17] (3) प्रेरितों का समय सीमित था; वे इस समय में इस्राएल के सभी नगरों में भी नहीं घूम सकते थे। (4) उद्धार ''पहले तो यहूदी और फिर यूनानी के लिए'' था (रोमियों 1:16)। सुसमाचार अन्यजाति जगत में तब तक नहीं सुनाया जाना था जब तक पहले यहूदियों को इसे सुनने का अवसर न मिल जाता (प्रेरितों 10)।

आयत 7. प्रेरितों को न केवल उनका मिशन दिया गया था, बल्कि उन्हें उनका संदेश भी दिया गया था। **प्रचार** के लिए बाहर जाने पर उन्होंने लोगों को बताना था, ''**स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है**।'' यह उनका मुख्य संदेश था, पर बेशक वे इसे पूरे विस्तार से बताते थे कि इसका क्या अर्थ है। निश्चय ही यह वही संदेश था जिसका प्रचार यूहन्ना और यीशु ने किया था (3:2 पर टिप्पणियां देखें; 4:17)। राज्य ''निकट'' होने की बात कहने का अर्थ था कि यह अभी आया नहीं था परन्तु तेज़ी से निकट आ रहा था। इस घोषणा के कुछ वर्षों के भीतर, यीशु की भविष्यवाणियों को पूरा करते हुए, राज्य सामर्थ के साथ आया (मरकुस 9:1; प्रेरितों 1:8; 2:1-4, 29-36)। यह कहना कि राज्य अभी नहीं आया है, या यह सिखाना कि यह दूर भविष्य में आने वाला है, नये नियम की प्रामाणिक शिक्षाओं का इनकार करना है (1 कुरिन्थियों 15:24, 25; कुलुस्सियों 1:13; इब्रानियों 12:28; प्रकाशितवाक्य 1:9; 6:10 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 8. प्रेरितों ने केवल प्रचार ही नहीं करना था, बल्कि उन्हें आश्चर्यकर्म भी करने थे जिनसे सुसमाचार की करुणा का पता चलता और उनकी सच्चाई की पुष्टि होती; उन्होंने **बीमारों**

को चंगा करना, मरे हुओं को जिलाना, कोढ़ियों को शुद्ध करना [और] **दुष्टात्माओं को निकालना** था। यीशु ने पहले ही बीमारों को चंगा किया था (4:23, 24; 8:5-16; 9:1-8, 20-22, 27-31, 35), मुर्दों को जिलाया था (9:18-26), कोढ़ी को शुद्ध किया था (8:1-4) और दुष्टात्माओं को निकाला था (4:24; 8:16, 28-34; 9:32-34)। प्रेरितों ने यीशु के पदचिह्नों पर चलना था।

इन आश्चर्यकर्मों ने प्रेरितों के संदेश की पुष्टि के चिह्नों का काम करना था (मरकुस 16:17, 18; इब्रानियों 2:3, 4)। उन्हें ये काम अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के उद्देश्य से ही नहीं करने थे। बल्कि उन्हें यह साबित करने के उद्देश्य से किया गया था कि उनका संदेश परमेश्वर की ओर से है। सुसमाचार के अन्य विवरणों से यह स्पष्ट है कि बारहों, और बाद में सत्तर के सत्तर, बीमारों को चंगा और दुष्टात्माओं को निकाल सकते थे (मरकुस 6:12, 13; लूका 9:6; 10:17)। इसके अलावा प्रेरितों के काम पुस्तक में प्रेरितों के मुर्दों को जिलाने के दो उदाहरण हैं (प्रेरितों 9:36-43; 20:9-12)।

यीशु ने अपने प्रेरितों से कहा, ''**तुम ने सेंत-मेंत पाया है, सेंत मेंत दो।**'' उन्हें बिना दाम दिए आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी गई थी। यह निशुल्क दी गई थी और इसे जिसे भी इसकी आवश्यकता हो उसे निशुल्क ही दिया जाना था। छलिए बड़ी-बड़ी शक्तियां होने का दावा करते थे और वे अपने छल का इस्तेमाल निजी लाभ के लिए करते थे (देखें 7:15-23)। शमौन, टोना और इलीमास (बार यीशु) ऐसे ही लोग थे (प्रेरितों 8:9-13, 18-24; 13:6-12)। सुसमाचार सुनाने वाले उस सहायता के योग्य हैं, जो उन्हें मिलती है (10:10; 1 कुरिन्थियों 9:8-14), पर वे अपनी सेवाएं बेच नहीं सकते। ऐल्डरों के रूप में सेवा करने वाले आदमियों के लिए ''धन के लोभ से मुक्त'' होना (1 तीमुथियुस 3:3) और ''नीच कमाई का लोभी'' न होना आवश्यक है (तीतुस 1:7; देखें 1 पतरस 5:2)।

आयतें 9, 10. प्रेरितों ने अपनी सेवाओं के लिए पैसे नहीं लेने थे, न ही उन्हें धन इकट्ठा करना था जिससे वे अपने खर्चे पूरे करते। यीशु ने कहा, ''**अपने पटुकों में न तो सोना, और न चांदी, और न तांबा रखना।**'' इस संदर्भ में ''सोना,'' ''चांदी,'' और ''तांबा'' अलग-अलग प्रकार के सिक्कों को कहा गया है, जिसमें सोना सबसे महंगा है और तांबा सबसे सस्ता। ''पटुकों'' का संकेत ''कमरबन्द में पैसे रखने के प्राचीन ढंग'' की ओर है।[18]

प्रेरितों को मार्ग के लिए झोली न रखने का भी निर्देश था, जो इस मिशन के थोड़ी देर तक रहने का संकेत है। ''झोली'' के लिए शब्द (*pēra*) थैले की एक किसम हो सकता है जिसमें भिखारी लोग मिली हुई भीख डालते थे। यीशु ने पहले ही पटुकों की बात कर दी थी, इसलिए वह बोरे की बात कर रहा होगा जिसमें आम तौर पर भोजन ले जाया जाता था।[19] मरकुस और लूका के अनुसार उन बारहों को अपने साथ न तो रोटी और न पैसा ले जाना था (मरकुस 6:8; लूका 9:3)। इसका अर्थ यह हुआ कि उन्हें न तो भोजन और न ही भोजन खरीदने के लिए पैसे अपने पास रखने थे। उन्हें पूरी तरह से परमेश्वर पर और दूसरों की करुणा पर निर्भर होना था।[20]

यीशु ने उन्हें बताया कि वे **न दो कुर्ते, न जूते और न लाठी** लें, जो इस मिशन के अस्थाई होने को दिखाता है। ''कुर्ते'' (*chitōn*) का अनुवाद ''कोट'' (NASB) या ''कमीज़ें'' (5:40 पर टिप्पणियां देखें) भी हो सकता है। क्या यीशु के कहने का अर्थ यह था कि वे जूता

लें ही न, नंगें पांव ही जाएं? इसके विपरीत मरकुस 6:9 कहता है कि उन्हें ''जूतियां'' पहननी थीं। मत्ती और मरकुस द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्द अलग-अलग हैं। कुछ लोगों का कहना है कि मत्ती का शब्द (*hupodēma*) ''जूतों'' के लिए है जबकि मरकुस का शब्द (*sandalion)* ''सैंडिल'' का संकेत देता है।[21] जो भी हो विचार यह है कि उन्हें *अतिरिक्त* कपड़े या जूते नहीं लेने थे, बल्कि वही पहनना था, जो उन्होंने पहना हुआ था। यीशु ने उन्हें केवल एक छड़ी लेने को भी कहा (मरकुस 6:8)। छड़ी का इस्तेमाल चलने के साथ-साथ सुरक्षा के लिए भी किया जाता था: यीशु उन्हें बिना बचाव के नहीं भेज रहा है। जूते और छड़ी सफ़र के लिए मूल आवश्यकताएं होती थीं (निर्गमन 12:11)।

यीशु वैरागी जीवन शैली को बढ़ावा नहीं दे रहा था, बल्कि वह अपने चेलों को परमेश्वर पर निर्भर रहना सिखा रहा था।[22] बाद में ग्रेट कमीशन की तैयारी करते हुए प्रभु द्वारा इन पाबन्दियों को निरस्त कर दिया गया (लूका 22:35, 36)।

ये निर्देश देने के बाद यीशु ने समझाया, **''क्योंकि मजदूर को उसका भोजन मिलना चाहिए।''** ''भोजन'' (ASV; NKJV; NRSV) (*trophē*) के लिए ''सहायता'' (NASB) शब्द भी हो सकता है। यह कहावत लूका में मिलती है, जहां यीशु ने सत्तर जनों को भेजा था (लूका 10:7)। परन्तु वहां पर ''मज़दूरी'' (*misthos*) शब्द का इस्तेमाल हुआ है।

प्रेरितों ने चाहे अपनी सेवाएं बेचनी नहीं थीं पर उनकी सहायता उन लोगों द्वारा की जानी थी, जिनकी उन्होंने सेवा करनी थी। उन्होंने अपनी जीविका के लिए परमेश्वर और उसके लोगों पर निर्भर होना था। यह शर्त आज भी प्रभावी है, क्योंकि पौलुस ने प्रभु की कलीसिया की मण्डलियों को यही आज्ञा दी थी (1 कुरिन्थियों 9:8-14; गलातियों 6:6)। पहली सदी के सुसमाचार प्रचारकों की ही नहीं, बल्कि ''पूर्णकालिक'' सेवा करने वाले ऐल्डरों को भी ''दोगुने आदर के योग्य'' समझा जाना क्योंकि ''वे [अपनी] मज़दूरी के हकदार'' थे (1 तीमुथियुस 5:17, 18)।

आयत 11. जिस किसी नगर या गांवों की बात यीशु के सिखाने और चंगाई देने की सेवकाई का स्मरण कराती है, जो ''सब नगरों और गांवों में'' जाता था (9:35)। प्रेरितों ने प्रचार के अपने मिशन पर इन स्थानों पर जाने पर सम्मानित लोगों के साथ रहने की कोशिश करनी थी। विशेषण शब्द **योग्य** (*axios*) जो आयत 10 में भी मिलता है, का संकेत उसकी ओर है, जो काबिल या हकदार हो। ऐसे लोगों के लिए अतिथि सत्कार करने वाले और प्रेरितों के संदेश को ग्रहण करने वाले होना आवश्यक है, यानी उच्च नैतिक और आत्मिक स्वभाव वाले बदनाम लोगों के साथ रहने से उनका मिशन गड़बड़ा सकता था।

योग्य व्यक्ति ढूंढ़ लेने के बाद उन्हें वहां रहने तक *उसी के यहां* रहना होता था। रहने के लिए बेहतर स्थान ढूंढ़ने के बजाय अर्थात ''घर-घर फिरने'' (लूका 10:7) के बजाय उन्हें उसी में सन्तुष्ट होना आवश्यक था। यह मेज़बान के प्रति शिष्टाचार की बात थी।

समय और संस्कृति के लिए बिना खर्च लिए अतिथि सत्कार करना तर्कहीन उपेक्षा नहीं होगी।[23] पूरे नये नियम में मसीही आतिथ्य की आज्ञा और नमूने दोनों दिए गए हैं (रोमियों 12:13; 1 तीमुथियुस 3:2; तीतुस 1:8; इब्रानियों 13:2; 1 पतरस 4:9; 3 यूहन्ना 5-8)।[24]

आयतें 12, 13. यीशु ने प्रेरितों को यहां तक बताया कि जब वे *घर* में प्रवेश करें तो उन्हें क्या कहना है। इस मामले में, उप-पद महत्वपूर्ण है। उन्हें ''*उसी* घर'' को जिसका अभी वर्णन

किया गया, अपनी **आशीष** देनी थी। परम्परागत यहूदी अभिवादन *शालोम* या ''तुम [तुम पर] शान्ति [हो]'' था (देखें न्यायियों 19:20; 1 शमूएल 25:6; भजन संहिता 122:7, 8; यूहन्ना 20:19, 21, 26)। इस मज़बूत शब्द में ''शान्ति,'' ''भलाई,'' ''स्वास्थ्य,'' और ''समृद्धि'' का संकेत था। JNT में इन आयतों का अनुवाद इस प्रकार से है: ''जब तुम किसी के घर में प्रवेश करो, तो कहो 'शालोम अलेखम [तुम पर शान्ति हो]!' यदि वह घर इसके योग्य हो, तो तुम्हारा *शालोम* इस पर होता है; यदि नहीं, तो तुम्हारा *शालोम* तुम्हारे पास वापस आ जाए।'' यीशु ने दो अलग-अलग परिस्थितियों की परिकल्पना की, एक तो यह जिसमें प्रेरितों ने **घर** का न्याय बिल्कुल उसके **योग्य** करना था और दूसरा जिसमें उन्होंने घर का गलत न्याय (**वे योग्य न हों**) करना था। पहले दृश्य में उनकी **कल्याण की आशीष** बनी रहनी थी। दूसरे में उन्होंने [इसे] वापस ले लेना था।

आयत 14. जब भी प्रेरितों को किसी **घर** या **नगर** में ठुकराया जाता, उन्हें **अपने पांवों की धूल झाड़** देनी थी। डेविड हिल ने लिखा है, ''घर या नगर के साथ सम्बन्ध का कोई निशान न रहे।''[25] ये कार्य अपने आप में यह कहने का ढंग था कि कोई उस ज़मीन पर खड़ा है जिसे ''काफ़िर'' माना जाना आवश्यक है।[26] यहूदी लोग इस भय से कि वे इसे अशुद्ध धूल से दूषित न कर दें, अन्यजातियों के इलाके में से गुज़रने पर अपने पांवों की धूल औपचारिक रूप से झाड़ देते थे और अपने देश लौट जाते थे (देखें आमोस 7:17)।[27] पौलुस और बरनबास ने पिसिदिया के अन्ताकिया में यहूदियों द्वारा ठुकराए जाने पर अपने पांवों की धूल झाड़ ली (प्रेरितों 13:50, 51)। पौलुस ने कुरिन्थुस के यहूदियों के विरुद्ध जिन्होंने ''विरोध और निन्दा'' की थी अपने वस्त्र झाड़ते हुए कहा ''तुम्हारा लहू तुम्हारी ही गर्दन पर रहे! मैं निर्दोष हूं। अब से मैं अन्यजातियों के पास जाऊंगा'' (प्रेरितों 18:6)। इस मामले में प्रेरितों का सांकेतिक कार्य ''उन पर गवाही'' (मरकुस 6:11) के लिए भी होना था।

आयत 15. यीशु ने कहा कि **न्याय के दिन उस नगर की दशा से सदोम और अमोरा के देश की दशा अधिक सहने योग्य होगी**। यानी किसी भी नगर की जिसने उसके प्रेरितों को ठुकराया (11:20-24 पर टिप्पणियां देखें)। ''अधिक सहने योग्य होगी'' वह वाक्यांश है जिसका इस्तेमाल यीशु ने ''उस भयानक दण्ड को व्यक्त करने के लिए किया, जो उन नगरों पर पड़ेगा, जो उसे ठुकराते हैं।''[28] सदोम और अमोरा परमेश्वर द्वारा नष्ट किए गए ''दुष्टता के आदर्श नगर'' थे।[29]

यीशु की बात का मुख्य अर्थ यह है कि अवसर मिलना जिम्मेदारी ही होता है (देखें लूका 12:48)। यीशु के समय के नगरों को सदोम और अमोरा के नगरों से अधिक विश्वास करने और मन फिराने का अवसर मिला था; इसलिए उनके लिए न्याय भी कठोर होना था, दूसरों के बजाय कुछ लोगों के लिए परमेश्वर का न्याय अधिक सहन योग्य कैसे हो सकता है? उस सुसमाचार को, जिसका प्रचार यीशु ने किया, नकारने वाले लोगों के पास पुराने नियम के दुष्ट से दुष्ट नगरों से अधिक अवसर था। सदोम और अमोरा को उन नगरों और गांवों से कम दुष्ट क्यों माना गया जिनमें प्रेरितों ने प्रचार किया? इसका कारण अज्ञानता रहा होगा। यीशु के समय के नगरों ने यीशु की सेवकाई के बड़े प्रकाश के सामने पाप किया।[30]

बारहों को चेतावनी (10:16-23)

[16]''देखो, मैं तुम्हें भेड़ों के समान भेड़ियों के बीच में भेजता हूं, इसलिए सांपों के समान बुद्धिमान और कबूतरों के समान भोले बनो। [17]परन्तु लोगों से सावधान रहो, क्योंकि वे तुम्हें महासभाओं में सौपेंगे, और अपनी पंचायतों में तुम्हें कोड़े मारेंगे। [18]तुम मेरे लिए हाकिमों और राजाओं के सामने उन पर, और अन्यजातियों पर गवाह होने के लिए पहुंचाए जाओगे। [19]जब वे तुम्हें पकड़वाएं तो यह चिन्ता न करना कि हम किस रीति से या क्या कहेंगे, क्योंकि जो कुछ तुम को कहना होगा, वह उसी घड़ी तुम्हें बता दिया जाएगा। [20]क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं हो, परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुम में बोलता है।

[21]''भाई-भाई को और पिता पुत्र को, घात के लिए सौंपेंगे, और बच्चे माता-पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे। [22]मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे, पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का उद्धार होगा।

[23]''जब वे तुम्हें एक नगर से सताएं, तो दूसरे को भाग जाना। मैं तुम से सच कहता हूं, तुम इस्राएल के सब नगरों में न फिर चुकोगे कि मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।''

यीशु की सेवकाई के आरम्भ से ही लोग उसका विरोध करते थे। अपने प्रेरितों को आज्ञा देते हुए उसने उन्हें चेतावनी दी कि उन्हें भी ऐसी ही शत्रुता का सामना करना पड़ेगा। आयत 16 से 23 उस सताव का वर्णन करती हैं, जिसे उन्होंने सहना था, उस अगुआई का जो उन्हें दी जानी थी और उन परिस्थितियों का जिनसे उन्हें विरोध करने वाले नगर में रहने के बजाय वहां से भाग जाना चाहिए था।

आयत 16. यीशु ने कहा, **''देखो, मैं तुम्हें भेड़ों के समान भेड़ियों के बीच में भेजता हूं।''** ''भेड़ें'' पशुओं में सबसे अधिक निर्भर हैं। कोई स्वाभाविक बचाव न होने के कारण वे लाचार होती हैं और आसानी से डर जाती हैं। ''भेड़िये'' फलस्तीन में उनके सबसे बड़े शत्रु थे। यीशु यहां पर जानवरों की बात नहीं कर रहा था पर वह केवल उदाहरण के रूप में उनका इस्तेमाल कर रहा था कि लोग कई बार किस प्रकार व्यवहार करते हैं। उसके प्रेरित भेड़ें थीं और उनके शत्रु भेड़िये। विलकिन्स ने ध्यान दिलाया है, ''यीशु रूपक को उलट देता है। इससे पहले चेलों को भेड़ों के पास जाना था'' (9:36; 10:6), परन्तु अब उन्होंने भी भेड़ियों के बीच में जाने वाली भेड़ें होना था।[31] बारहों को परभक्षियों के संसार में भेजा जा रहा था (देखें 7:15; यूहन्ना 10:10, 12; प्रेरितों 20:29)। मसीह के हर शत्रु के द्वारा उन्हें शिकार के रूप में ढूंढ़ा जाना था।

यह बात सच थी इस कारण यीशु ने उन्हें ताड़ना दी, **''इसलिए सांपों के समान बुद्धिमान और कबूतरों की समान भोले बनो।''** यह भाषा शायद लोकोक्ति की भाषा हो। रब्बियों के साहित्य में ऐसी ही कहावत परमेश्वर के लिए कही जाती है। इस्राएलियों की बात करते हुए, उसने कहा, ''मेरे साथ वे कबूतरों की तरह भोले हैं, परन्तु जातियों के साथ वे सांपों की तरह चतुर हैं।''[32] कबूतर को, सम्भवतया नूह के समय से, शान्ति, भोलेपन और शुद्धता के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। वे बहुत बचावहीन प्राणी हैं और परभक्षियों के लिए आसान शिकार भी। ''सांप'' आरम्भिक समयों से ही अपनी चतुराई और बुद्धि के लिए जाने जाते हैं (देखें उत्पत्ति 3:1); उनमें से अधिकतर ज़हरीले और अत्यधिक खतरनाक होते हैं। ''यीशु के चेलों

को सांपों के लिए मानी जाने वाली सारी बुद्धि की आवश्यकता है, परन्तु उनमें धूर्त चालाकियों और धोखेबाजी की जगह कबूतरों के लिए मानी जाने वाले हानि रहित और भोलेपन की खूबी होनी आवश्यक है।''[33]

प्रेरित युद्धप्रिय तो नहीं होने थे पर उन्हें दूसरे लोगों के साथ अपने व्यवहारों में बुद्धि का इस्तेमाल करना आवश्यक था। उन्हें उस विरोध से अवगत होना आवश्यक था, जिसका आना पक्का था और उन्हें इसका सामना संरचनात्मक ढंग से करने के लिए तैयार होना आवश्यक था। परमेश्वर का राज्य सांसारिक युद्ध की किसी तलवार के साथ नहीं बल्कि ''आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है'' के साथ फैलाया जाना था (इफिसियों 6:17; देखें मत्ती 26:51-54; यूहन्ना 18:36; इब्रानियों 4:12)।

विभिन्न गुटों ने प्रेरितों के शत्रु बन जाना था। धार्मिक व्यवस्था (10:17), सरकारी अधिकारियों (10:18) और परिवार के लोगों (10:21) द्वारा विरोध होना था।

आयत 17. पहला विरोध धार्मिक व्यवस्था से होना था। यीशु ने चेतावनी दी ''**लोगों से सावधान रहो, क्योंकि वे तुम्हें महासभाओं में सौपेंगे, और अपनी पंचायतों में तुम्हें कोड़े मारेंगे**।'' मत्ती द्वारा वर्णित ''महासभाओं'' शब्द केवल सरकारी अदालतों के लिए नहीं था। उस समय वे बारह केवल यहूदी नगरों में जा रहे थे। इस्राएल देश एक धर्मतन्त्र था जिसका शासन परमेश्वर द्वारा चलाया जाता था; उनका कानून वह व्यवस्था थी जिसे उन्हें मूसा के द्वारा दिया गया था। यह होने के कारण धार्मिक अधिकारियों का न्याय भी सरकारी मामलों में किया जाता था। ''महासभाओं'' (*sunedrion*) शब्द स्थानीय तेईस सदस्यों वाली (सनहेद्रिनों) यहूदी सभाओं के लिए है, चाहे निर्णय लेने के लिए इनमें से केवल तीन न्यायियों की आवश्यकता होती थी।[34] विलकिन्स ने लिखा:

> न्यायियों की महासभा या न्यायालय द्वारा निर्णय दिए जाने के बाद व्यक्ति को न्यायी के सामने लिटाकर चाबुक मारे जाते थे। कोड़ों की मानक संख्या चालीस थी, बेशक यह संख्या अपराध को उपयुक्त बनाने के लिए ऊपर-नीचे हो सकती थी। परन्तु चालीस से अधिक कोड़े नहीं मारे जा सकते थे, क्योंकि चालीस से अधिक कोड़े अमानवीय माने जाते थे (व्यवस्थाविवरण 25:1-3)। यह संख्या आम तौर पर एक कम चालीस होती थी, ताकि गलती न हो जाए [मिशनाह *मैक्कोथ* 3.2, 10; देखें 2 कुरिन्थियों 11:24]।[35]

''आराधनालयों'' का इस्तेमाल आराधना के भवनों के रूप में ही नहीं किया जाता था, बल्कि उनका इस्तेमाल उन स्थानों के रूप में भी किया जाता था, जहां न्याय किया जाता है (देखें 23:34)।

आयत 18. दूसरा, सरकारी अधिकारियों की ओर से विरोध होना था। यीशु ने कहा, ''**तुम मेरे लिए हाकिमों और राजाओं के सामने उन पर, और अन्यजातियों पर गवाह होने के लिए पहुंचाए जाओगे**।'' यह चेतावनी मुख्य रूप में उन घटनाओं की बात करते हुए जो ग्रेट कमीशन दिए जाने के बाद आरम्भिक कलीसिया में होनी थीं, सीमित आज्ञा से आगे बढ़ गई (28:18-20)। राजनैतिक परिस्थिति के कारण अन्यजाति हाकिमों का सामना होना आवश्यक था। रोम ने यहूदियों को चाहे उनके अपने धर्म के कानूनी मामलों में काफ़ी रियायत दी, परन्तु

उन्हें प्राण दण्ड देने की अनुमति नहीं थी, विशेषकर मृत्युदण्ड के मामलों में (1:19 पर टिप्पणियां देखें; 12:14)। चाहे यहूदी लोग आमतौर पर इस निषेध का उल्लंघन करते थे, पर यह नियम था, जो उन पर लागू था।[36] प्रेरितों के काम में, यहूदियों की ओर से सताव के कारण फेलिक्स और फेस्तुस नामक रोमी ''राज्यपालों'' के सामने पौलुस की पेशियां हुईं (प्रेरितों 24; 25)। वह अग्रिप्पा के सामने भी पेश हुआ (प्रेरितों 25:23)। ऐसी पेशियों से आरम्भिक मसीही लोगों को मसीह की गवाही देने का अवसर मिल गया।

आरम्भिक मसीही लोगों के ऊपर पहले सताव चाहे यहूदियों की ओर से हुआ, पर बाद में यह काम मुख्य रूप में रोमी सरकार ने अपने हाथ में ले लिया। 64 ईस्वी में नीरो द्वारा किए गए सताव के सम्बन्ध में टेसिटुस ने लिखा है कि मसीही लोग ''अपनी घृणित बातों के लिए घृणित वर्ग'' माने जाते थे और विशेषकर ''मनुष्यजाति के विरुद्ध घृणा'' के लिए।[37] उनके प्रति कुछ दुर्भावना उनके विरुद्ध लगाए जाने वाले कुछ झूठे आरोपों के कारण थी। उन पर आदमखोर होने का आरोप लगाया जाता था क्योंकि वे मसीह के शरीर को खाने और उसके लहू को पीने की बातें करते थे। उन पर अनैतिकता का आरोप लगाया जाता था, क्योंकि वे प्रीति (अगापे) भोजों में शामिल होते थे। उन पर ''आगजनी'' का आरोप लगाया जाता था क्योंकि उनके प्रचारक आतश (आग के विनाश) में संसार के अन्त की बात कहते थे। उन पर गद्दार होने का आरोप लगाया जाता था क्योंकि वे अपने प्रभु के रूप में कैसर के नाम की शपथ खाने या रोम की शान के लिए लड़ने से इनकार करते थे। ऐसे आरोप आधारहीन थे और बिना सिर पैर के थे, पर ये तथ्य कि उन्हें माना जाता था उसका कारण थे या शायद उसे सही ठहराया जाना, क्योंकि अधिकतर सताव उनके विरुद्ध ही था।

आयतें 19, 20. इन आयतों में की गई प्रतिज्ञा प्रेरितों के लिए की गई थी, न कि मसीही युग के लिए। उन्हें अलग-अलग महासभाओं में ले जाए जाने के समय, **यह चिंता** करने की आवश्यकता नहीं थी कि अपने ऊपर लगाए गए आरोपों का उत्तर देने के लिए वे **किस रीति से या क्या कहेंगे**। यीशु ने वचन दिया, **''जो कुछ तुमको कहना होगा, वह उसी घड़ी तुम्हें बता दिया जाएगा।''** सुसमाचार के विवरणों में पवित्र आत्मा की ओर से सहायता की यह पहली प्रतिज्ञा थी (देखें मरकुस 13:11; लूका 21:14, 15; यूहन्ना 14:15-17, 26; 15:26, 27; 16:13-15)। इन लोगों को अपने बचाव में दिए जाने वाले उत्तरों के साथ **आत्मा** द्वारा प्रेरित किया जाना था। जेम्स बर्टन कॉफमैन ने इस वचन को ''उस प्रेरणा का जिसने सब सत्य में प्रेरितों की अगुआई की, नये नियम के सबसे मजबूत कथनों में से एक'' कहा है।[38]

आयत 21. तीसरा, विरोध अपने ही परिवार के लोगों की ओर से होना था: **''भाई-भाई को और पिता पुत्र को, घात के लिए सौंपेंगे, और बच्चे माता-पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे।''** यह चेतावनी अपने आप में सामान्य प्रतीत होती है, और प्रेरितों के अपने परिवार के लोगों द्वारा उनसे दुर्व्यवहार किए जाने के प्रमाण की कमी है। परन्तु परिवार की ओर से ऐसा विरोध मसीह के पीछे चलने वाले हर व्यक्ति के लिए एक सम्भावित खतरा है।

कुछ रब्बियों की शिक्षा थी, ''उस पीढ़ी में जब मसीहा आएगा, जवान लोग बूढ़ों का अपमान करेंगे, ... बेटियां अपनी माताओं के विरुद्ध और बहुएं अपनी सासों के विरुद्ध उठ खड़ी होंगी।''[39] इस संदर्भ में परिवार के लोगों ने विश्वास करने वाले अपने सम्बन्धियों को

अधिकारियों के हाथ ''पकड़वा'' (*paradidōmi*) या ''सौंप'' देना था (देखें 10:17) ताकि उन्हें मृत्यु दी जा सके।

मसीह के सुसमाचार का इरादा चाहे लोगों को इकट्ठे करना है पर लोगों के सुसमाचार को ठुकराने का परिणाम परिवारों में भी फूट पड़ना है। यीशु ने यह भी बताया:

> क्या तुम समझते हो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हूं? मैं तुम से कहता हूं; नहीं, बरन अलग कराने आया हूं। क्योंकि अब से एक घर में पांच जन आपस में विरोध रखेंगे, तीन दो से और दो तीन से। पिता पुत्र से, और पुत्र पिता से विरोध रखेगा; मां बेटी से, और बेटी मां से, सास बहू से, और बहू सास से विरोध रखेगी (लूका 12:51-53; देखें 10:35, 36)।

आयत 22. यीशु ने अपने अनुयायियों को बताया, ''**मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे**।'' इस मामले में ''सब'' का अर्थ अक्षरश: नहीं लिया जाना चाहिए। यह अतिश्योक्ति का एक उदाहरण है और इसमें लोगों की सब किस्में, जातियां और वर्ग आ सकते हैं। ''मेरे नाम के कारण,'' या ''मेरे नाम की खातिर'' का अर्थ यह भी हो सकता है कि उनसे घृणा की जानी थी, क्योंकि मसीह से भी घृणा की गई थी (यूहन्ना 15:18-25) या यह कि उनसे इस कारण घृणा की जानी थी क्योंकि उन्होंने उसका नाम ''मसीही'' पहना था (1 पतरस 4:14-16)। विलकिन्स ने लिखा है कि ''मेरे नाम के कारण'' एक महत्वपूर्ण ख्रिस्त शास्त्रीय अभिव्यक्ति है (तुलना 5:11; 24:9) जो इस्राएल की आराधना और निष्ठा के एकमात्र फोकस के रूप में परमेश्वर के अपने प्रतिनिधि के रूप में उसके नाम के पुराने नियम के महत्व की ओर वापस ले जाता है (उदाहरण के लिए निर्गमन 3:15; 6:3; 9:16; 20:7)।''[40]

उस नाराजगी के बावजूद जो उसके अनुयायियों को संसार में सहनी पड़ सकती थी, यीशु ने एक प्रोत्साहन देने वाली प्रतिज्ञा की: ''**पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा**।'' ''अन्त'' के लिए यूनानी शब्द (*telos*) कइयों को समय के अन्त के असतर्क अनुमानों में ले गया है। यदि यह बात मुख्यतया प्रेरितों के लिए थी तो यीशु के कहने का अर्थ समय का अन्त कैसे हो सकता है? यदि यह हर युग के मसीही लोगों पर लागू कर भी दी जाए तो भी क्या इसका अर्थ यह होगा कि वे उद्धार पाने के लिए समय के अन्त तक जीवित रहें? बेशक नहीं! *Telos* का यहां कोई उपपद नहीं है। यह ''समय के अन्त तक'' का संकेत नहीं देता (देखें 24:13; 1 कुरिन्थियों 13:7; प्रकाशितवाक्य 3:11)।[41] इसका अर्थ ''उनके मिशन के अन्त तक'' हो सकता है पर अधिक सम्भावना ''प्राण के अन्त तक'' की है[42] (देखें प्रकाशितवाक्य 2:10)।

आयत 23. यीशु ने आगे कहा, ''**जब वे तुम्हें एक नगर में सताएं, तो दूसरे को भाग जाना**।'' अपने संदर्भ में यह बात अभी भी प्रेरितों की सेवकाई से सम्बन्धित है। उन्हें पहले ही बता दिया गया था कि यदि किसी नगर में उन्हें अच्छी तरह ग्रहण नहीं किया जाता तो वे ''[अपने] पांवों की धूल झाड़'' दें (10:14)। वह उन्हें बता रहा होगा कि यदि किसी विशेष नगर में उन्हें द्वेषपूर्ण व्यवहार या कार्यों का सामना करना पड़े तो वे वहां रुके रहकर स्थिति को संभालने का प्रयास न करें; इसके बजाय वे जल्दी से और चुपके से वहां से किसी दूसरे नगर को चले जाएं। कलीसिया की स्थापना के बाद पौलुस ने अपनी मिशनरी यात्राओं में ऐसा ही किया

(प्रेरितों 14:1-7; 17:1-10)।

यीशु ने आगे कहा, ''**मैं तुम से सच कहता हूं, तुम इस्राएल के सब नगरों में न फिर चुकोगे कि मनुष्य का पुत्र आ जाएगा**।'' ''मनुष्य का पुत्र आ जाएगा'' वाक्यांश इसके अर्थ के सम्बन्ध में हमें बड़ी चुनौती देता है। पांच सम्भावनाओं पर विचार करना अच्छा होगा:

(1) यह वाक्यांश प्रेरितों के उन नगरों में जाने के थोड़ी देर बाद यीशु के आने की बात हो सकती है (11:1; देखें लूका 10:1)। शायद यह सबसे आसान और सबसे सम्भावित व्याख्या है।

(2) एक और विचार दानिय्येल 7:13, 14 के साथ आरम्भ होता है, जो ''मनुष्य के पुत्र'' के आने के उल्लेख का पवित्र शास्त्र का पहला वचन है। यह दृश्य मसीह के राज्याभिषेक को भविष्यवाणी में दिखाता है। इसलिए यीशु की इस बात की व्याख्या के लिए दानिय्येल 7:13, 14 का इस्तेमाल किया जाए तो वह पिन्तेकुस्त के दिन पर अपने राज्य में अपने आने का संकेत दे रहा होगा (16:28; प्रेरितों 2:36)। यदि यह व्याख्या सही है तो हमारा प्रभु उस समय की बात कर रहा था, जो लगभग दो साल दूर था। अन्य शब्दों में यीशु कह रहा था, ''जब तक तुम सब नगरों में अब और हमारी सेवकाई में बाद में जाओगे, मनुष्य का पुत्र अपने राज्य के साथ आ जाएगा।''

(3) यीशु इस्राएल के विरुद्ध न्याय में अपने आने का संकेत दे रहा होगा, जब 70 ईस्वी में रोमी सेना द्वारा यरूशलेम को नष्ट किया गया था। परन्तु यदि उसके कहने का यह अर्थ था तो वह उस घटना की बात कर रहा था, जो लगभग 40 वर्ष बाद होने वाली थी। यह विचार उस समय रेखा को जिसका यीशु संकेत दे रहा था, खींचता हुआ लगेगा।

(4) चौथा विचार भी जो दानिय्येल 7:13, 14 पर आधारित है, मसीह के द्वितीय आगमन में वाक्यांश पर लागू होता है। एक बार फिर यह विचार उस समय रेखा से कहीं दूर हटाया जाना आवश्यक है जिसकी यीशु घोषणा कर रहा था।

(5) इस वाक्यांश का एक स्पष्ट रूप से गलत विचार यह मान्यता है कि यीशु इस पृथ्वी पर राज करने के लिए वापस आने की बात कर रहा था। इस विचार के अनुसार, प्रेरितों के सब नगरों में पहुंचने से पहले, मनुष्य के पुत्र को इन नगरों पर राज करने के लिए लौट जाना था। पहली बात तो यह है कि नया नियम यीशु को कहीं पर भी इस पृथ्वी पर राज करने के लिए लौटने के लिए नहीं दिखाता। दूसरा यह कि जब वह दोबारा आएगा तो वह अपने साथ स्वर्ग में रहने के लिए उद्धार पाए हुओं को ले जाएगा (देखें यूहन्ना 18:36; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16-18)।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

लिमिटेड कमीशन (अध्याय 10)

निम्न विभाजनों के साथ पूरे अध्याय को विस्तार दिया जा सकता है: (1) यीशु ने प्रेरितों को बुलाया (10:1-4); (2) यीशु ने प्रेरितों को आज्ञा दी (10:5-15); (3) यीशु ने प्रेरितों को चेतावनी दी (10:16-23); और (4) यीशु ने प्रेरितों को शिक्षा दी (10:24-42)।

डेविड स्टिवर्ट

यीशु की सेवकाई के विस्तार (10:1-8)

प्रेरितों को मसीह द्वारा और पवित्र आत्मा की प्रेरणा से विलक्षण रूप से बुलाया गया था। आज मसीह लोगों में वही विशेषताएं नहीं हैं। परन्तु हमें सुसमाचार के द्वारा बुलाया गया है और हमारे पास आत्मा की प्रेरणा से दिया वचन है। इसके अलावा ग्रेट कमीशन आज भी हमारे लिए है (मत्ती 28:18-20)। प्रेरितों की तरह ही हम यीशु की सेवकाई के विस्तार हैं। कहते हैं ''हम उसके हाथ और पांवों हैं।'' इस संसार में मसीह का कार्य यदि पूरा करना है तो उसे उसके चेले ही करेंगे।

डेविड स्टिवर्ट

यीशु के प्रेरित (10:2-4)

यीशु ने मूलतया अपने व्यक्तिगत राजदूत बनाने के लिए बारह पुरुषों को चुना (मरकुस 3:13-15; लूका 6:12, 13)। ये लोग उसके बपतिस्मे के समय से लेकर उसके ऊपर उठाए जाने तक उसकी पूरी सेवकाई के दौरान उसके साथ रहे थे और जी उठने के गवाह थे (प्रेरितों 1:21, 22; 2:32)। मत्तियाह को यहूदा की जगह चुना गया था जिसने यीशु को पकड़वाकर अपनी जान स्वयं ही ले ली थी (प्रेरितों 1:15-26)। पौलुस को बाद में यीशु द्वारा प्रेरित चुना गया था (प्रेरितों 9:1-22; 1 कुरिन्थियों 15:1-11; 2 कुरिन्थियों 11:5)। केवल चौदह पुरुष विशेष रूप से मसीह के प्रेरित थे।

परन्तु नये नियम में ''प्रेरित'' शब्द का इस्तेमाल अन्य लोगों के विवरण के लिए भिन्न अर्थ में हुआ है। यीशु को स्वयं एक मिशन पर भेजे हुए प्रमुख उदाहरण होने के कारण ''प्रेरित'' कहा गया है (इब्रानियों 3:1)। प्रभु का भाई याकूब जी उठने का गवाह था (1 कुरिन्थियों 15:7) और यरूशलेम की कलीसिया में नेतृत्व की प्रमुख भूमिका में था (प्रेरितों 15:13-21; 21:17, 18; गलातियों 2:9)। उसे ''प्रेरितों'' में से एक बताया गया है (गलातियों 1:19)। एक और उदाहरण बरनबास है उसे और पौलुस को ''प्रेरित'' बताया गया है (प्रेरितों 14:4, 14)। पवित्र आत्मा के द्वारा इस मिशन के लिए चुने जाने के कारण इन लोगों को अन्ताकिया की कलीसिया द्वारा प्रचार के लिए भेजा गया था (प्रेरितों 13:1-3)। अन्य लोगों को भी ''प्रेरित'' या ''दूत'' कहा गया है, क्योंकि उन्हें स्थानीय मण्डली द्वारा कोई विशेष कार्य करने के लिए दिया गया था (2 कुरिन्थियों 8:23; फिलिप्पियों 2:25; 1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 2:6)।

पतरस (10:2-4)

पतरस को प्रभु के प्रेरितों की हर सूची में ऊपर ही रखा जाता है, जिस कारण कइयों ने सुझाव दिया है कि वह प्रमुख प्रेरित था, बल्कि ''कलीसिया का सिर'' था। यह गलत अवधारणा मत्ती 16:18, 19 में पतरस से कही गई यीशु की बात को गलत समझने के आधार पर ही है। रोमन कैथोलिक चर्च का तो यहां तक दावा है कि पतरस पहला पोप था। पतरस ने कभी भी अपने लिए ऐसे अधिकार का दावा नहीं किया। पौलुस ने अन्यजातियों के साथ जाने के मामले में पतरस के कपट के लिए उसे डांट लगाई (गलातियों 2:11-14) पर बाद में पतरस ने पौलुस के गहरे ज्ञान के लिए उसकी तारीफ़ की (2 पतरस 3:15, 16)। पतरस ने विनम्रतापूर्वक

अपने आपको ''साथी ऐल्डर'' बताया (1 पतरस 5:1)। मसीह की आरम्भिक कलीसिया के ऊपर कभी कोई ''पोप'' नहीं था, और मसीह ही अपनी कलीसिया के ऊपर एकमात्र सिर है (इफिसियों 1:22, 23; 5:23; कुलुस्सियों 1:18)।

''ऊपर से सामर्थ'' (10:8)

यीशु ने प्रेरितों से प्रतिज्ञा की कि वे उसके ''गवाह'' होने के लिए पवित्र आत्मा से ''सामर्थ'' पाएंगे (प्रेरितों 1:8; देखें लूका 24:49)। उनके द्वारा पाई जाने वाली सामर्थ या ''दानों'' से उन्हें पवित्र आत्मा के विभिन्न दान दूसरों को देने की योग्यता दी जानी थी (1 कुरिन्थियों 12:4-11)। प्रेरितों के काम के आरम्भिक अध्यायों में यह स्पष्ट है कि प्रेरित ही इस काम को कर पाने वाले एकमात्र लोग थे (प्रेरितों 8:14, 15)।

पवित्र आत्मा का सहज रूप से बहाया जाना केवल दो बार हुआ (प्रेरितों 2; 10)। प्रेरितों के लिए पवित्र आत्मा की ओर से आश्चर्यकर्म की शक्तियां पाने का एक ढंग प्रेरितों के द्वारा उन्हें ये दान दिया जाना था। यह प्रार्थना और प्रेरितों के हाथ रखे जाने से मेल खाते हुए हुआ।

अपने मन परिवर्तन के बाद किसी समय (प्रेरितों 9) पौलुस को आश्चर्यकर्म करने के दान और उन्हें दूसरों को देने की शक्ति मिली थी। एक प्रेरित के रूप में वह नये मसीही बनने वालों को अपने हाथ रखकर उन्हें आत्मा के दान देने की शक्ति दे सकता था (प्रेरितों 19:6; रोमियों 1:11; 2 तीमुथियुस 1:6)। मसीही व्यक्ति को दान मिल जाने के बाद ऐसा लगता है कि वह प्रार्थना के द्वारा अतिरिक्त दानों की इच्छा कर सकता था। पौलुस ने कुरिन्थुस के लोगों को लिखा कि वे ''बड़े से बड़े वरदानों की धुन में'' रहें और विशेषकर ''यह कि भविष्यवाणी करो'' (1 कुरिन्थियों 12:31; 14:1)। उसने भाषाएं बोलने वालों को यह ''प्रार्थना'' करने के लिए उत्साहित किया ''[तुम] उसका अनुवाद भी कर'' सकें (1 कुरिन्थियों 14:13)।

जब अन्तिम प्रेरित मर गया, तो दान देने की सामर्थ भी उसके साथ मर गई। उस अन्तिम व्यक्ति की मृत्यु से जिसके ऊपर किसी प्रेरित ने अपने हाथ रखे थे, पृथ्वी पर से पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्म करने के दान भी बन्द हो गए।

''मार्ग का प्रकाश'' (10:9, 10)

10:9, 10 में दी गई विशेष पाबन्दियां केवल प्रेरितों के लिए बेशक सीमित आज्ञा या लिमिटेड कमीशन दिया गया था पर उससे हमारे लिए प्रभु के ग्रेट कमीशन को पूरा करने की कोशिश करते हुए कम से कम दो महत्वपूर्ण तथ्य हैं। पहले जिस प्रकार से प्रेरितों के लिए यह भरोसा रखना आवश्यक था कि परमेश्वर उनके मिशन के लिए उपाय करेगा, वैसे ही हमें भी भरोसा रखना आवश्यक है कि वह आज हमारी देखभाल करेगा। दूसरा, भौतिक सम्पत्तियां संसार में सुसमाचार ले जाने के हमारे मिशन में रुकावट डाल सकती हैं। हेयर ने लिखा है:

> किसी भी बात में, आयतें 9-10 का मुख्य संदेश ''मार्ग का प्रकाश'' ही है। आधुनिक कुंजी में बदल देने पर यह सुझाव देता है कि मसीही प्रचारक भौतिकवाद की अति से मुक्त जीवन बिताएं। यह उनके लिए भी है, जो दूर दराज के स्थानों में सुसमाचार के प्रचार के लिए अपने घर और देश को छोड़ते हैं और उनके लिए भी जो घर में

पड़ोसियों के साथ अपने विश्वास को साझा करना चाहते हैं। हमें अतिरिक्त सामान को सुसमाचार के मार्ग में नहीं आने देना चाहिए।[43]

डेविड स्टिवर्ट

प्रचारकों की सहायता करना (10:10)

कुछ लोग सुसमाचार सेवकों को अपने कार्य के लिए मुआवज़ा देने पर आपत्ति करते हैं। परन्तु यीशु ने स्पष्ट किया कि ''मजदूर को उसका भोजन मिलना चाहिए'' (10:10)। पौलुस ने न केवल प्रचारकों को वेतन देने की वकालत की, बल्कि उसने इसकी आज्ञा दी: ''जब कि हमने तुम्हारे लिए आत्मिक वस्तुएं बोईं, तो क्या यह कोई बड़ी बात है, कि तुम्हारी शारीरिक वस्तुओं की फसल काटें?'' (1 कुरिन्थियों 9:11); ''इसी रीति से प्रभु ने भी ठहराया, कि जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं, उनकी जीविका सुसमाचार से हो'' (1 कुरिन्थियों 9:14)। प्रचारकों को न केवल धन प्राप्त करने के लिए प्रचार करना चाहिए, बल्कि उन्हें पर्याप्त भोज ही मिलना चाहिए।

डेविड स्टिवर्ट

प्रतिफल और दण्ड के दर्जे (10:15)

अपने प्रेरितों को ठुकराने वालों की बात करते हुए यीशु ने कहा कि ''न्याय के दिन उस नगर की दशा से सदोम और अमोरा के देश की दशा अधिक सहने योग्य होगी'' (10:15)। ''अधिक सहने योग्य'' दण्ड न होने का संकेत नहीं है। यीशु ऐसे विचार का संकेत भी नहीं दे रहा था। सबसे स्पष्ट अर्थ यह है, सदोम और अमोरा के पास वैसा ही ज्ञान या अवसर नहीं था जैसा उन नगरों के पास था, जहां यीशु और उसके चेले गए थे, इस कारण उन नगरों के लोग परमेश्वर के संदेश को ठुकराने का उतना दण्ड नहीं पाएंगे। अन्य शब्दों में, जिन्हें अधिक अवसर मिला है उन्हें जिम्मेदारी भी बड़ी मिली है (देखें इब्रानियों 10:26-30)। दण्ड के अलग-अलग दर्जों का विचार अन्य वचनों में भी मिलता है (11:20-24; लूका 12:41-48; 20:47)।

नया नियम यह भी संकेत देता है कि प्रतिफल के अलग-अलग स्तर है (5:19; 6:19-21; 18:4; लूका 19:17-19; 1 कुरिन्थियों 3:12-15; 2 कुरिन्थियों 9:6; याकूब 3:1)। परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार मसीह में दिखाया गया है (इफि 2:8-10)। कोई भी स्वर्ग के लिए अपने मार्ग को कमा नहीं सकता (रोमियों 6:23); परन्तु यह इस तथ्य को कम नहीं कर सकता कि परमेश्वर मसीही लोगों को जांचेगा और हर एक को अपना-अपना प्रतिफल मिलेगा। पौलुस ने लिखा है, ''क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किया हों पाए'' (2 कुरिन्थियों 5:10; देखें रोमियों 2:5-11; 14:10-12; 1 कुरिन्थियों 4:5; प्रकाशितवाक्य 20:11-15)। मसीही व्यक्ति के कामों के परमेश्वर के मूल्यांकन से तय होता है कि उसे प्रतिफल कैसा मिलेगा।

विरोध का सामना करना (10:16-23)

यीशु ने भविष्यवाणी की कि उसके चेलों को तीन अलग-अलग मोर्चों पर सताव सहना पड़ेगा: धार्मिक व्यवस्था, सरकार से और उनके परिवारों की ओर से। अलग-अलग प्रकार से संसार भर के मसीही लोगों को ऐसी ही शक्तियों की ओर से विरोध का सामना करना पड़ सकता है।

धार्मिक व्यवस्था। कइयों को जो सरकारी धर्म वाले देशों में रहते हैं, ऐसे विरोध का सामना करना पड़ सकता है। यह भी हो सकता है कि अपने आपको ''मसीही'' कहलाने वाले लोग दूसरे लोगों से जो अपने आपको ''मसीही'' कहते हों, घृणा करते हों। जो लोग ''केवल मसीही'' बनने की कोशिश करते हैं, आम तौर पर उन्हें सब लोगों द्वारा तुच्छ माना जाता है।

सरकार। ऐसे इलाकों में रहने वाले लोग जहां सरकार द्वारा धर्म की स्वतन्त्रता नहीं मिलती है, अकेले में और गैर कानूनी ढंग से इकट्ठा होने को विवश हैं; उनको गिरफ्तार किया जाता, पीटा जाता और जेल में डाल दिया जाता है। अन्य मामलों में सरकार की अनैतिकता और अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने वाले मसीही लोगों का विरोध किया जाता है।

परिवार। कइयों का मसीही होने के कारण अपने ही परिवार के लोगों द्वारा मज़ाक उड़ाया गया है। नैतिक मूल्यों और प्राथमिकताओं के अन्तर आमतौर पर लड़ाई का कारण बनते हैं। कुछ अति के मामलों में, विश्वासियों को अपने सम्बन्धियों द्वारा ही ठुकरा दिया गया है।

डेविड स्टिवर्ड

प्रवचन की तैयारी (10:20)

यीशु ने प्रेरितों को पवित्र आत्मा की ओर से ईश्वरीय प्रेरणा देने की प्रतिज्ञा की। माउंस ने लिखा है, ''अफ़सोस, इस आयत ने इतने अधिक प्रचारकों को रविवार का संदेश सही ढंग से तैयार न करने का बहाना दे दिया है।''[44] हमें आज परमेश्वर की प्रेरणा का दान नहीं मिला है; इसके बजाय हमें परमेश्वर की प्रेरणा से दिए हुए वचन का अध्ययन करना आवश्यक है। जिमी ऐलन सरसी, आरकैंसा की हार्डिंग यूनिवर्सिटी में अपने छात्रों को बताया करते थे, ''प्रेरितों ने इसे प्रेरणा के द्वारा पाया; हम इसे पसीने के द्वारा पाते हैं।''

डेविड स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]डोनल्ड ए. हेग्नर. *मैथ्यू 1-13,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33ए (डलास: वर्ड बुक्स, 1993), 262. [2]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रेटेशन (लुईसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 113. [3]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 881. [4]देखें जैक पी. लुईस, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 1, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 145; और आर. टी. फ्रांस, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 176. [5]*जौंडरवन इलस्ट्रेटेड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक;* संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 2002), 67 में माइकल जे. विलकिन्स, ''मैथ्यू।'' [6]यीशु ने अपने चेलों को वैसा ही ''अधिकार'' या ''सामर्थ'' दी, जैसा उसने पिछले अध्यायों में दिखाया था (7:28, 29;

8:9 पर टिप्पणियां देखें)। [7]कुछ प्राचीन हस्तलिपियों में मरकुस 3:14 में *apostolos* शब्द नहीं मिलता है। [8]पौलुस के विवरण के लिए जिसे विलक्षण रूप में प्रभु द्वारा चुना और आज्ञा दी गई, ''प्रेरित'' शब्द का इस्तेमाल आमतौर पर हुआ है (1 कुरिन्थियों 15:8-10)। इसके अलावा इस शब्द का इस्तेमाल उसके संकेत के लिए इसके व्यापक अर्थ के साथ भी किया जाता है (प्रेरितों 14:4, 14; 2 कुरिन्थियों 8:23; फिलिप्पियों 2:25; 1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 2:6)। [9]देखें डब्ल्यू. एफ. अल्ब्राइट एंड सी. एस. मन, *मैथ्यू,* द एंकर बाइबल (गार्डन सिटी, न्यू यार्क: डबलडे एंड कं., 1971), 117. [10]लुईस, 147.

[11]मोआब में ''करिय्योत'' नामक एक और नगर था (यिर्मयाह 48:24; आमोस 2:2)। [12]हैग्नर, 266; देखें, द *इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क., संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 2:1151-52 में जॉर्ज वेसली बुचनन ज्युडास इस्कैरियोंट। [13]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 92. [14]विलियम बार्कले, द *गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* अंक 1, 2रा संस्क., द डेली स्टडी बाइबल (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1958), 1:373. [15]वही। [16]सामरियों का उल्लेख मत्ती में केवल एक बार है (10:5)। यह मिले जुले लोग 722 ई.पू. में इस्राएलियों के अश्शूरियों की दासता के बाद बाहर से आए विदेशियों के साथ विवाह करने के कारण बने थे (2 राजाओं 17:24; देखें नहेम्याह 13:23, 24)। यहूदियों के साथ उनके झगड़े निर्वासन काल के बाद के आरम्भ के थे (एज्रा 4:1-24)। [17]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, द *न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू एण्ड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 89. [18]माउंस, 92. [19]देखें बाउर, 811. [20]एसेनियों के साथ एक समानता बनाई जा सकती है, जो अपने ही सम्प्रदाय के लोगों का अत्याधिक आतिथ्य करने वाले थे। जोसेफस ने लिखा है, ''जिस कारण वे दूरस्थ भागों में जाते समय अपने साथ कुछ नहीं ले जाते, चाहे चोरों के भय से, अपने साथ अपने हथियार ले जाते थे'' (जोसेफस *वार्स* 2.8.4)।

[21]देखें जॉन लाइटफुट, *ए कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट फ्रॉम द टालमुड एंड हेब्रेका: मैथ्यू-1* कोरिन्थियंस, अंक 2, *मैथ्यू-मार्क* (ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1859; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर, 1979), 183-85. [22]डेविड हिल, द *गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 186. [23]फ्रांस, 181, [24]पुराने और नये दोनों नियमों में अतिथ्य के उदाहरणों के लिए, देखें विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री: एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 459. [25]हिल, 187. [26]माउंस, 93. [27]देखें टालमुड *नेडारिम* 53बी; *सेन्हेड्रिन* 12ए. [28]एच. लियो बोल्स, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1936), 226. [29]उत्पत्ति 13:13; 19:24, 25; व्यवस्थाविवरण 32:32; यशायाह 1:10; यहेजकेल 16:46, 48, 49; मत्ती 11:22, 24; लूका 10:12; 17:29; रोमियों 9:29; 2 पतरस 2:6; यहूदा 7. [30]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंटी ऑन मैथ्यू* (आस्टिन, टैक्सस: फ़र्म.फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1977), 136.

[31]विलकिन्स, 69. [32]*रब्बाह सौंग्स ऑफ़ सौंग्स* 2.14.1. [33]द *इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क., संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1979), 1:988 में गरहर्ड एफ. हेसल, ''डव।'' [34]मिशनाह *सैन्हेड्रिन* 1.2. [35]विलकिंस, 69. [36]यीशु की पेशियां इस नियम के काम करने का प्रमाण हैं। पहले उस पर महासभा द्वारा यरूशलेम में मुकदमा चलाया गया, परन्तु हेरोदेस द्वारा भी उससे पूछताछ की गई और अन्त में उसे रोमी हाकिम पुन्तियुस पिलातुस द्वारा मृत्यु का दण्ड दिया गया था (लूका 22:54-23:25)। [37]टेसिटुस *एनल्स* 15.44. [38]कॉफमैन, 137. [39]टालमुड *सेन्हेड्रिन* 97ए। [40]विलकिन्स, 69.

[41]लुईस, 152. [42]एल्बर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामैंट: मैथ्यू एंड मार्क,* संपा. रॉबर्ट फ्रयू (फिलाडेल्फिया: पृष्ठ नहीं, 1832; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1974), 113. [43]हेयर, 112. [44]माउंस, 94.